*ॐ*

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्  विषय-हिन्दी

दिनांक—11/02/2021

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

**<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>**

**प्रश्न 1 : शहरवासी सिर्फ माटी वाली को नहीं, उसके कनस्तर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं। आपकी समझ से वे कौन से कारण रहे होंगे जिनके रहते 'माटी वाली' को सब पहचानते थे?**

**उत्तर**: शहरवासी माटी वाली तथा उसके कनस्तर को इसलिए पहचानते होंगे क्योंकि पूरे टिहरी शहर में  वहीं अकेली माटी वाली थी। उसका कोई भी प्रतियोगी नहीं था। वही शहरों के सभी घरों में लीपने वाली लाल मिट्टी देती थी। लाल मिट्टी की सबको ज़रुरत होती थी। इसलिए सभी उसे पहचानते थे तथा उसके ग्राहक थे। वह पिछले कई वर्षों से शहर की सेवा कर रही थी। इस कारण स्वाभाविक रूप से सभी लोग उसे पहचानते थे । माटी वाली की गरीबी, फटेहाली और बेचारगी भी उसकी पहचान का एक मुख्य कारण रही होगी।

**प्रश्न 2: माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज़्यादा सोचने का समय क्यों नहीं था?**
~~~~~~~~~~

**उत्तर**: माटी वाली एक गरीब और निम्न स्तर का जीवन जीने वाली महिला थी| वह मेहनत करके रोजी-रोटी कमाती थी। उसके सामने सबसे बड़ी समस्या अपना तथा बुड्ढे का पेट पालना ही था | इस काम के लिए पहले वह माटाखान जाती थी और वहाँ से मिट्टी खोदकर लाती थी फिर उसे कनस्तर में भर कर घर-घर बेचती थी। इन्ही सब काम मे उसका सारा समय बीत जाता था जिसके चलते माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में सोचने का अवसर ही नहीं मिल पाता था।

**प्रश्न 3 : 'भूख मीठी कि भोजन मीठा' से क्या अभिप्राय है?**

**उत्तर:** इस प्रश्न से यह तात्पर्य है कि भोजन मीठा या स्वादिष्ट नहीं होता, वह भूख के कारण स्वादिष्ट लगता है। इसलिए रोटी चाहे रूखी हो या साग के साथ; वह भूख के कारण मीठी प्रतीत होती है| अतः स्वाद भोजन में नहीं, भूख में होता है। भूख लगने पर रूखा सूखा भोजन भी स्वादिष्ट लगने लगता है। भूख न होने पर स्वादिष्ट भोजन भी बे-स्वाद लगने लगता है।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी "कुसुम"